ISSN 2278 - 0327

ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन में सामाजिक जनसंचार माध्यमों की भूमिका

(गजरौला ब्लॉक के दो गाँवों के संदर्भ में)

पारुल
शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

डॉ. सरिता
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

शोध सार:

प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन में सामाजिक जनसंचार माध्यमों की भूमिका का सूक्ष्म रूप में अध्ययन किया गया है। संचार साधनों के कारण ग्रामीण विकास के विविध पक्षों यथा- कृषि व तत्सम्बन्धी कार्यों, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक इत्यादि पक्षों में होने वाले परिवर्तनों का गुणात्मक एवं मात्रात्मक अध्ययन विशिष्ट रूप में करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन क्षेत्र अमरोहा जनपद के गजरौला ब्लॉक के दो गाँवों की जनसंख्या पर किया गया है। यह क्षेत्र तकनीकी दृष्टि से पिछड़े हैं एवं उनमें नवाचार को अपनानें की दर और तीव्रता कम है। शोध पत्र का उद्देश्य लोगों में सामाजिक जनसंचार और नवाचार को अपनाने के लिए प्रेरित करना है जिससे क्षेत्र का समन्वित ग्रामीण विकास संभव हो सके। जिसके लिए प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक स्रोत से प्राप्त आँकड़े का प्रयोग किया गया है। शोध समस्या संबंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रश्नावली तथा साक्षात्कार, अनुसूची का प्रयोग किया गया है। यह शोध पत्र व्याख्यात्मक व विश्लेषणात्मक अनुसंधान पर आधारित है।

मुख्य शब्द: ग्रामीण, सामाजिक परिवर्तन, जनसंचार, नवाचार, समावेशी, विकास।

प्रस्तावना:

समकालीन विश्व में संचार के जन माध्यमों की भूमिकाएँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं। यह समाजीकरण का एक सशक्त माध्यम बन गया है। सामाजिक गतिविधियों पर नियंत्रणात्मक दृष्टि रखना सामाजिक जन संचार माध्यमों की अन्य महत्वपूर्ण भूमिका है। यह केवल परम्परा का वहन ही नहीं करता बल्कि यह सामाजिक आलोचना को भी आधार देता है और इस रूप में सामाजिक नियंत्रण का साधन बनता है। सामाजिक जनसंचार माध्यम राष्ट्रीय विकास में तीन तरह से सहायक होते हैं। जनता को राष्ट्रीय विकास की सूचना देना, विकास प्रक्रिया में सहभागी बनाना, विकास के लिए आवश्यक तकनीकी दक्षता प्रदान करना। परिवर्तन प्रकृति का एक शाश्वत एवं अटल नियम है। मानव समाज भी उसी प्रकृति का अंग होने के कारण परिवर्तनशील है। समाज की इस परिवर्तनशील प्रकृति को स्वीकार करते हुए मैकाइवर ने लिखा है कि- *''समाज परिवर्तनशील एवं गत्यात्मक है।''* ग्रीक विद्वान हेरेक्लिटिश ने भी कहा था, *''सभी वस्तुएँ परिवर्तन के बहाव मे हैं।''* सामान्यत: सामाजिक परिवर्तन का तात्पर्य समाज में घटित होने वाले परिवर्तनों से है। प्रारंभ में समाज वैज्ञानिकों ने उद्विकास, प्रगति एवं सामाजिक परिवर्तनों में कोई भेद नहीं किया था। वे इन तीनों अवधारणाओं का प्रयोग एक ही अर्थ में करते थे। शैक्षिक प्रगति के कारण विद्वानों ने इसके अर्थों में व्यापक विभेद किया है। कुछ विद्वानों ने सामाजिक ढाँचे में होने वाले परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहा है, तो कुछ विद्वानों ने सामाजिक संबंधों के परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहा है। संपूर्ण समाज या उसके किसी पक्ष में होने वाले परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहते हैं (Lussian, Pie, 1972)।

सामाजिक परिवर्तन जीवन की स्वीकृति रीतियों में परिवर्तन को कहते हैं, ये परिवर्तन भौगोलिक दशाओं के परिवर्तन से हुए हों अथवा सांस्कृतिक साधनों, जनसंख्या की रचना अथवा विचारधाराओं के परिवर्तनों से हुए हों या समूह के अंदर हुए आविष्कारों या प्रसार से हुए हों। सामाजिक परिवर्तन व दशाएँ हैं, जो मानवीय सम्बन्धों, व्यवहारों, संस्थाओं, प्रथाओं, परिस्थितियों, सामाजिक संरचना, प्रकार्य मूल्यों एवं कार्य प्रणालियों में होते हैं। संचार मनुष्य की मूलभूत जरूरत है। आदिकालीन लोगों द्वारा चित्र बनाकर अपनी बात सम्प्रेषित करने की शुरूआती तकनीक आज इण्टरनेट तक पहुँच गयी है। सामाजिक जनसंचार एक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति या समूह अपनी भावना एवं संवेग अन्य व्यक्ति या समूह तक ऐसी सक्षमता से पहुचाएँ, ताकि वे उसे समझकर ग्रहण कर अपनी प्रतिक्रिया का बोध दिला सके। सामाजिक जनसंचार का अर्थ- जन समुदाय तक मुद्रित सामग्री, इलेक्ट्रानिक और लोक संस्कृति जैसे विभिन्न प्रकार के जन माध्यमों से विचारों, जानकारी, अनुभवों और मनोरंजन को लोगों तक पहुँचाना। सामाजिक जनसंचार, संचार का वह रूप है जो एक साथ अनगिनत लोगों के लिए हो। सामाजिक जनसंचार में किसी न किसी माध्यम या साधन की आवश्यकता होती है।

अध्ययन क्षेत्रः -

अमरोहा उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख जनपद है, जिसका जिला मुख्यालय अमरोहा है। प्रस्तुत शोध अध्ययन अमरोहा जिले के गजरौला ब्लॉक के चयनित ग्रामीण क्षेत्र फतेहपुर सुगाली तथा छीतरा ग्राम पंचायत को अध्ययन हेतु चयन किया गया है।

शोध अध्ययन का उद्देश्यः -

1. सामाजिक जनसंचार के माध्यमों एवं उसके प्रयोग के प्रति ग्रामीण समाज में रहने वालों की सामान्य अभिवृत्ति का अध्ययन।
2. ग्रामीण समाज के लोगों की विभिन्न मूलभूत समस्याओं के प्रति जागरूकता एवं परिवर्तन को ज्ञात करना।
3. सामाजिक जनसंचार के माध्यमों के कारण ग्रामीण सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिवर्तनों का विश्लेषण करना।

आंकड़ा स्त्रोत एवं विधितंत्रः -

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक स्त्रोत से प्राप्त आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। सामाजिक, आर्थिक परिवर्तनों को ज्ञात करने के लिए प्रश्नावली तथा साक्षात्कार व अनुसूची से प्राप्त आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में अमरोहा जनपद के गजरौला ब्लॉक के दो गाँवों के 400 (प्रत्येक से 200) उत्तरदाताओं से प्राप्त अभिमत को लिया गया है। यह शोध पत्र व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक अनुसंधान पर आधारित है।

परिणाम एवं व्याख्याः -

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रारंभ में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों पर सामाजिक जनसंचार माध्यमों के प्रभावों को सर्वेक्षित करने का प्रयास किया गया है। जिसके लिए शोध अध्ययन क्षेत्र के दो गाँवों से प्राप्त सूचनाओं का गहन एवं सूक्ष्मता से अध्ययन किया गया है तथा यह जाननें का प्रयास किया गया है कि क्या विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में सामाजिक जन संचार माध्यमों की भूमिका है? उत्तरदाताओं से प्राप्त अभिमत को निम्नलिखित विभिन्न सारणियों में दर्शाया गया है। प्राप्त प्राथमिक आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित क्षेत्र के कुल 400 उत्तरदाताओं में से 85.23 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ग्रामीण विकास हेतु सामाजिक संचार साधनों की आवश्यकता को स्वीकार किया है। आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट निष्कर्ष निकलता है कि "ग्रामीण विकास में सामाजिक जनसंचार माध्यमों की आवश्यकता है।" ऐसा इसलिए है कि, सामाजिक जनसंचार माध्यमों से विकास के कार्यक्रमों की पूर्ण जानकारी हो सकती है साथ ही उत्तरदाताओं ने यह भी स्वीकार किया है कि जहाँ संचार के साधनों की उपलब्धता है वहाँ ग्रामीण विकास की दर तीव्र और जहाँ संचार के साधनों का अभाव है अथवा कम हैं वहाँ पर विकास दर अपेक्षाकृत कम है।

ग्रामीण जीवन के विभिन्न पक्ष एवं जनसंचार माध्यमः -

सामाजिक पक्षः सामाजिक संचार माध्यम ग्रामीण जीवन शैली को बहुत प्रभावित किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में परम्परागत रहन-सहन एवं आचार-विचार में क्रांतिकारी परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है। इस प्रकार संचार माध्यमों की भूमिका व्यक्ति के विकास एवं सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हो गया है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि "*विकास के लिए सामाजिक जन संचार एक निवेश है।*" लेकिन वहीं पर टेलीविजन और मोबाइल, इंटरनेट का प्रसार निरंतर दिनों-दिन बढ़ रहा है, परन्तु उसका स्तर दिन-ब-दिन गिर रहा है। ज्यादातर व्यक्ति टेलीविजन और मोबाइल, इंटरनेट की चपेट में हैं वो घरों में कैद होकर रह गये हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि व्यक्तिगत रूप से अन्तःक्रिया कम हुयी है। जिससे हम की भावना में कमी आ रही है।

आर्थिक पक्षः भारत में राष्ट्रीय विकास की अवधारणा, भारत के ग्रामीण विकास में सन्निहित है। यदि कहा जाए कि आर्थिक विकास की धुरी, कृषि का विकास है और कृषि के विकास में ही आर्थिक विकास छिपा हुआ है, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। कृषि की दशा के सुधार हेतु सामाजिक जनसंचार-साधनों का सम्यक् प्रयोग करके तकनीकी व प्रौद्योगिकी ज्ञान एवं सूचनाओं से ग्रामीण/कृषकों को अवगत कराया जा सकता है तथा शासकीय व अशासकीय सहायता से भी लाभान्वित किया जा सकता है।

राजनैतिक पक्षः सामाजिक जनसंचार माध्यमों ने अपनी उपयोगिता के रूप में राजनीतिक गतिविधियों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इससे राजनीतिक जागरूकता को बढ़ावा मिलता है और लोगों में राजनीतिक गतिविधियों के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि होती है। चुनाव के पूर्व होने वाले जनमत संग्रह राजनैतिक संचार के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू है। संचार माध्यमों से आम जनता की आवश्यकताओं उनकी इच्छाओं एवं उनकी सोच प्रकट होती है। इन सबसे राजनीतिज्ञों को अपनें कार्यकलापों के बारे में फीडबैक मिलता है।

शैक्षिक पक्षः रेडियो, टेलीविजन के आविष्कार से संचार माध्यमों में नई क्रांति आयी। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन ने शहरी क्षेत्रों के अतिरिक्त सुदूर बीहड़ और ग्रामीण क्षेत्रों में भी अपनी लोकप्रियता कायम की। आम आदमी की मानसिकता बदलने में वह काफी हद तक सफल रहा। पढ़नें-लिखनें और सीखनें के अतिरिक्त व्यक्ति के दैनिक जीवन को प्रभावित करने वाले आयामों में भी इलेक्ट्रानिक मीडिया ने प्रभावित किया। कोरोना काल में इंटरनेट और संचार के साधनों का विकास ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के लिए वरदान सिद्ध हो रहा है। अध्ययन क्षेत्र में सर्वेक्षण और साक्षात्कार से ज्ञात हुआ है कि क्षेत्र के विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरूचि में अभिवृद्धि हुयी है।

धार्मिक पक्षः सामाजिक जनसंचार के विविध साधन आज के युग में राष्ट्रधर्म के विकास के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के आदर्श को प्रस्तुत कर रहे हैं। विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा शांति और सद्भावना, भाई-चारे का संदेश भेजने करने में सहायक होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में

रूढ़िवादिता और अंधविश्वास में तेजी से कमी आ रही है। सामाजिक जनसंचार माध्यमों के कारण अध्ययन क्षेत्र में रूढ़िवादी एवं अप्रासंगिक तथ्यों से निजात पाने की प्रवृत्ति का संचार हो रहा है। क्षेत्र में वैज्ञानिक सोच और तर्क वितर्क करने की प्रक्रिया का विकास हुआ है।

अपराध एवं जनसंचार: सामाजिक जनसंचार माध्यम समाज का दर्पण है। समाज में प्रतिदिन घट रही घटनाओं का विश्लेषण आम लोगों तक पहुँचाने का कार्य करता है। ये समाज में जहाँ अनेक प्रकार की गतिविधियों का निवारण तथा ज्ञानपरक तथ्य प्रस्तुत करते हैं वहीं इससे सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि होती है।

खान-पान में जागरूकता एवं जनसंचार: सामाजिक जनसंचार माध्यमों के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से और खान-पान के संबंध में विभिन्न विज्ञापन और जागरुकता कार्यक्रमों के कारण अध्ययन क्षेत्र में पोशण के संबंध में सजगता का संचार हुआ है। जिसका प्रभाव ग्रामीणों के खान-पान की दिन चार्य पर पड़ रहा है।

ग्रामीणों का शहरों की तरफपलायन एवं जनसंचार: सामाजिक जनसंचार माध्यमों द्वारा ग्रामीणों की विभिन्न शासकीय योजनाओं जैसे-मनरेगा, एस.जी.एस.वाई आदि के प्रति जागरुक होने पर इन कार्यक्रमों में भागीदारी बढ़ी है जिसके परिणाम स्वरूप ग्रामीणों का शहरों की तरफ पलायन में कमी आयी है।

निष्कर्ष:-

सामाजिक जनसंचार माध्यमों ने लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाया है। अब लोग जानने लगे हैं कि जिस समूह में उन लोगों का पालन-पोषण हुआ है, उस समूह में जीने का रास्ता ही, एकमात्र रास्ता नहीं है। बल्कि जीवन जीने के अनेक रास्ते हैं। सामाजिक जनसंचार में हुए क्रांतिकारी परिवर्तन, राष्ट्र के अंदर विभिन्न समूहों में बँटे हुए समाज को, एक सामाजिक संगठन के मूल्य एवं आदर्श एक समान रूप में विकसित हो रहे हैं। इस तरह यह एक तरफ तो राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दे रहा है तो दूसरी तरफ, सामाजिक परिवर्तन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा हैं। गाँव के सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के लिए गृह निर्माण, स्वास्थ्य, कृषि, रहन-सहन, विकास योजनायें, उद्योग में आधुनिक तकनीक का अनुकूलन आवश्यक है। सामाजिक जनसंचार माध्यम द्वारा गाँवों में आधुनिक तकनीक को उपयोग करने पर जोर दिया जा रहा है। और आज इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिल रहा है। प्रारंभिक रूढ़िवादी दृष्टिकोण के कारण अध्ययन क्षेत्र में नवाचार को अपनाने की दर कम थी लेकिन जागरूकता कार्यक्रमों के कारण अब अमरोहा जनपद के गजरौला ब्लॉक के दोनों गाँवों में शोध सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि इनकी अभिरूचि में वृद्धि हुयी है। सामाजिक जनसंचार माध्यम क्षेत्र के लिए अभिशाप न होकर वरदान सिद्ध हो रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. अग्रवाल, जी.सी., कुलश्रेष्ठ एस.पी. (2017-18), शैक्षिक तकनीकी एवं सूचना सम्प्रेषण तकनीकी, अग्रवाल प्रकाशन, पेज नं0 103-114.
2. चैरसिया, महीप, (2018), सामाजिक-आर्थिक, रूपांतरण एवं ग्रामीण विकास: जौनपुर जनपद का एक भौगोलिक अध्ययन", स्वीकृत शोध प्रस्ताव, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
3. चौरसिया, सोनम, (2019), इंटरनेट का किशोर छात्र-छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन", स्वीकृत शोध प्रस्ताव, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, पेज नं. 7-8.
4. सिंह, अरूण कुमार (2017) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ", मोतीलाल बनारसीदास, पेज नं. 19-80
5. चौरसिया, सोनम एवं सुनेजा, दीप्ति (2022) ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन में जनसंचार माध्यमों की भूमिका (जनपद अम्बेडकर नगर के जहाँगीरगंज, रामनगर, बसखारी विकास खण्ड के संदर्भ में)।
6. Chandana, R.C. and Sidhu, M.S., (1980); Introduction to Population Geography, Kalyany Publication, New Delhi, p- 59 & 62.
7. District Census Handbook Amroha (2018).
8. India (2001) Mass Communication, Publication Division, Ministry of Information and Broad Casting Govt. of India. Patiala House, New Delhi.
9. Lussian, Pie- Communication and Development. Edited, Newe Jerssey University Press. New Jerssey (1972), p- 4
10. Pathak, K.P.; Role of I.R.D.P. in the Rural Development of U.P.: A case study of five villages of Firozabad District & Published thesis & Research Publications Rajasthan, Jaipur, (1989). p- 7.
11. World Bank collection of development indicators (2020).